आपने लिखा

प्रिय संपादक,

संदर्भ के तीसरे अंक में प्रकाशित अनीता रामपाल का लेख 'कहां - कहां नहीं है बल' बेहद अच्छा लगा। मुझे याद है कि जब हम अहमदाबाद में इस तरह का एक पाठ लिखने के लिए विचार कर रहे थे तो कितनी दिक्कतें आईं थीं। अनीता का यह प्रयास वाकई सराहनीय है।

दीपक कुमार गुप्ता
गांधीनगर (गुजरात)

प्रिय संपादक,

संदर्भ का तीसरा अंक मिला। अमिताभ मुखर्जी का लेख 'सीधे सवाल - टेढ़े जवाब' पढ़ते समय याद आया कि सवालीराम के जवाब लिखते-लिखते हमारी स्थिति भी कुछ वैसी ही हुई थी।

लारा पटवर्धन
बंगलौर (कर्नाटक)

प्रिय संपादक,

हमारे विद्यालय के सभी शिक्षकों का मानना है कि यह पत्रिका शिक्षकों के लिए उपयोगी है। साथ ही इसमें दी जाने वाली सामग्री विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन में भी सहायक है।

प्राचार्य,
विवेकानंद उ. मा. विद्यालय, होशंगाबाद

वाक्य रचना ....

प्रिय संपादक,

संदर्भ के तीसरे अंक में प्रकाशित लेख 'बहस से निकले निष्कर्ष' होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्य की झलक प्रस्तुत करता है। वहीं 'सीधे सवाल - टेढ़े जवाब' बच्चों के आसान से लगने वाले प्रश्नों की जटिलताओं को स्पष्ट करते हुए उन्हें बच्चों के स्तर पर समझाने की कठिनाइयों से रूबरू कराता है - कृपया इस प्रकार के प्रश्नों का क्रम जारी रखिए। अनीताजी ने बल की बात सुलझे ढंग से समझाई और वह भी बच्चों के स्तर पर - साधुवाद।

इसी लेख में पृष्ठ 29 पर यह वाक्य रचना अखरने वाली है "चांद का खिंचाव पृथ्वी से 6 गुना कम है" तथा "चांद पर तुम्हारा भार 6 गुना कम हो जाएगा।"

आमतौर पर गुना का अर्थ ही अधिकता से है। जैसे 'क्ष' का 6 गुना 6क्ष या 6 × क्ष होगा। इसके साथ 'कम' शब्द का प्रयोग कुछ ऐसा लगेगा जैसे किसी व्यक्ति को 'उदार-हृदय कंजूस' कहा जाए। सही शब्दावली के लिए 6 गुना के स्थान पर 1/6 गुना या छठवां भाग कहना ज़्यादा सही होगा। हां 'बृहस्पति पर भार 5 गुना अधिक होगा' कहना ही अधिकता स्पष्ट करता है।

एक बात और कि गलतियां तो नगण्य हैं, फिर भी मेरे लेख में मेरा नाम छूट जाने की गंभीर भूल कैसे हो गई?

यतीश कानूनगो
डाइट, देवास (म. प्र.)

(संदर्भ के जनवरी-फरवरी अंक में प्रकाशित लेख 'आओ स्कूल-स्कूल खेलें' के लेखक यतीश कानूनगो हैं। असावधानीवश उनका नाम छूट गया था। इसके लिए हमें खेद है। संपादक मंडल)

प्रिय संपादक,

'संदर्भ' एक सराहनीय प्रयास है। इसके माध्यम से शिक्षकों के अनुभव शिक्षकों तथा आम पाठकों तक पहुंच सकेंगे।

हमारी राय में विज्ञान और गणित के अलावा दूसरे विषयों के शिक्षकों के अनुभवों को भी प्रकाशित किया जाए। साथ ही सामयिक शैक्षणिक घटनाक्रम पर आधारित सामग्री का भी समावेश संभव हो तो ठीक रहेगा। क्या इसे मासिक बनाया जा सकता है? मेरा सुझाव है कि संदर्भ को और आकर्षक बनाने के लिए मुखपृष्ठ को रंगीन बनाना और आकार को थोड़ा और बड़ा करना ठीक रहेगा।

प्राचार्य
आयुध निर्माणी उ. मा. विद्यालय, इटारसी

खुली किताब कब तक देगी साथ ....?

प्रिय संपादक,

खुली किताब परीक्षा निःसंदेह बेहतर है और साथ ही परीक्षकों के लिए अधिक चुनौतीपूर्ण भी, तभी तो पुस्तक में से नकल करके लिखे गए जवाबों का मूल्यांकन कैसे हो, यह सवाल इतना पेचीदा बन जाता है। संदर्भ के तीसरे अंक में प्रकाशित लेख 'परीक्षा तो थी फिर भी' से जुड़े नकल के इस सवाल पर कुछ कहना चाहूंगी। आपके अनुभवों से यह सिद्ध हो जाता है कि 'नकल के लिए अक्ल चाहिए' यह पुरानी कहावत कितनी सटीक है। यह भी सही है कि नकल में भी क्षमताओं के विभिन्न स्तर देखे जा सकते हैं। पर इस तथ्य को भी नज़र-अंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए कि जितना महत्वपूर्ण समझदारी से पढ़ या लिख पाना है, उतना ही अपने विचारों को अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर पाना भी है। विद्यार्थियों को अगर अपने शब्दों में जवाब लिखने से ज़्यादा आसान, किताब में से नकल करना लग रहा है तो इस बात की पड़ताल होनी चाहिए कि क्या उनमें अपने शब्दों में बोल या लिख पाने का पर्याप्त आत्मविश्वास नहीं है? ऐसा है तो उसके लिए प्रयास ज़रूरी है। कक्षा में इसके लिए कोशिशें ज़रूर होती होंगी। परन्तु परीक्षा में भी नकल करके लिखे गए जवाबों को कम न आंकते हुए भी विद्यार्थियों को अपने शब्दों में लिखने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

ऐसा न हो कि आगे चलकर उन्हें सिर्फ इसलिए गंभीरता से न लिया जाए क्योंकि वे अपनी समझ और जानकारी को अभिव्यक्त न कर सकें। यह अपेक्षा भी तो गलत ही है कि विद्यार्थी हमेशा किताब में लिखी चीज़ों से सहमत हो। आखिर किताब में जो लिखा है वो अंतिम सच तो नहीं होता। विद्यार्थी का अपना एकदम अलग मत भी हो सकता है। ऐसे में उसे अपने शब्दों में अपनी बात कह पाना आना ज़रूरी है।

अंततः एक अलग पहलू यह भी ध्यान में रखना ज़रूरी है कि विद्यार्थी की किताबों पर निर्भरता कहीं बहुत न बढ़ जाए। यदि यह मान भी लिया जाए कि वह सिर्फ 'खुली किताब परीक्षाओं' में ही बैठेगा; तो भी जीवन की हर परिस्थिति में जवाब तलाशने के लिए उसके पास खुली किताब मौजूद होगी, ऐसा संभव नहीं।

शशि सक्सेना, नई दिल्ली

प्रिय संपादक,

संदर्भ के जनवरी-फरवरी 95 के अंक में प्रकाशित निम्न दो बातों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहेंगे:

1. 'आसपास बिखरे हैं सूचक' लेख में लाल जासौन के फूल का ज़िक्र है। जासौन को जसौदी भी कहा जाता है तथा इसके फूल को (Shoe Flower) भी कहते हैं। इसी पौधे का अंग्रेज़ी नाम (China Rose) तथा वानस्पतिक नाम (Hibiscus Rosa Sinensis) है। पेड़-पौधों के प्रचलित नाम अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग होते हैं। इसलिए एक नाम के साथ-साथ अन्य प्रचलित तथा वानस्पतिक नामों का उल्लेख करना हमेशा पाठकों के हित में होगा।

2. 'पानी को जांचें परखें' लेख में उदासीनीकरण के लिए कोष्ठक में टाइट्रेशन लिखा गया है जो गलत है। उदासीनीकरण का तात्पर्य न्यूट्रलाइज़ेशन से होता है तथा अनुमापन को टाइट्रेशन कहते हैं।

डॉ. ओ.पी. जोशी एवं डॉ. जयश्री सिक्का
गुजराती साइंस कॉलेज, इंदौर (म. प्र.)

(अनुवाद की इस गलती के लिए हमें खेद है। - संपादक मंडल)

प्रिय संपादक,

संदर्भ का दूसरा अंक मिला। अंतिम पेज पर 'चीता' पढ़ा तो पढ़ता ही चला गया। मुझे यह काफी रोचक लगा । मुझे पत्रिका का आकार तो ठीक लगता है, लेकिन मुखपृष्ठ कुछ आकर्षक होना चाहिए।

सरन बिहारी माथुर
भोपाल (म. प्र.)

एक नज़र ...

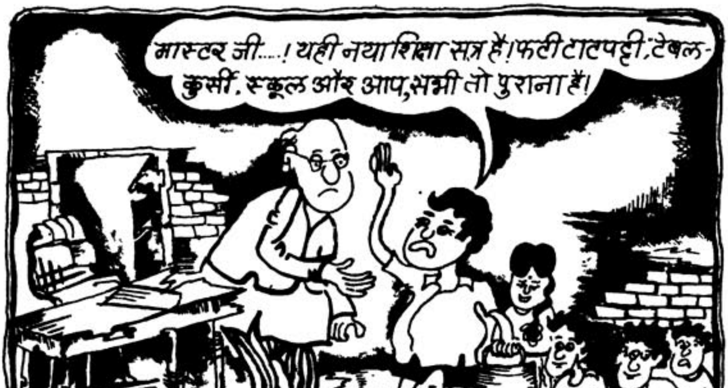
मास्टर जी.....! यही नया शिक्षा सत्र है! फटी टाटपट्टी, टेबल-कुर्सी, स्कूल और आप, सभी तो पुराना है!

कार्टूनिस्ट - संजय भोंसले, सेंधवा म.प्र.